VISION IAS

www.visionias.in

VISION IAS
M N 27 AUG 2023 No. 3
RECEIVED

ESSAY

Name of Candidate	Ishwar lal Gurjar						Test Code	2320		
Medium Hindi/Eng.	Hindi	Registration Number		1	2	9	5	8	1	8
Centre	MN.	Date	2	7	–	0	8	–	2	3

INDEX TABLE

Section	Maximum Marks	Marks Obtained
A	125	
B	125	
Total Marks Obtained:		

Important Instructions

1. The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

   प्रवेश–पत्र में प्राधिकृत माध्यम में **निबन्ध** लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न–सह–उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों पर अंक नहीं दिए जाएंगे।

2. Word limit, as specified, should be adhered to.

   प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द–संख्या के अनुसार होने चाहिए।

3. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

   प्रष्न–सह–उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ अथवा पृष्ठ भाग को पूर्णतः काट दीजिए।

Remarks:

General Instructions

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).

   उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवष्यक है (नाम, प्रश्न–पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक इत्यादि)।

2. Write **two** essay, choosing **one** topic from each of the Sections A and B, in about 1000-1200 words each.

   खण्ड A व B प्रत्येक से **एक** विषय चुनकर **दो** निबन्ध लिखिए, जो प्रत्येक लगभग 1000–2000 शब्दों का हो।

3. Do not write answers in bad of illegible handwriting. Such answer may not be evaluated.

   उत्तर अस्पष्ट अथवा गन्दी लिखावट में न लिखें। इस प्रकार के उत्तरों का मूल्यांकन नहीं भी किया जा सकता है।

4. Write answers in ink only. Do not use pencil for writing the answer. However, pencil may be used for drawing diagrams, sketches, etc.

   उत्तर स्याही से ही लिखें। उत्तर लिखने के लिए पेंसिल का उपयोग न करें। हालांकि आरेख, चित्र इत्यादि बनाने के लिए पेंसिल का उपयोग किया जा सकता है।

5. Do not write answers in a medium other than the authorized medium in the Admission Certificate. Do not use mixed language, i.e., authorized and unauthorized media together, for writing answers.

   प्रवेश–पत्र में उल्लेख किए गए माध्यम के अलावा अन्य किसी माध्यम में उत्तर न लिखें। अधिकृत और अनधिकृत की मिली–जुली भाषा का भी उपयोग न करें।

6. Write answers at the specified spaces (right below the questions) only. Answers written elsewhere at unspecified spaces in the Booklet shall not be evaluated.

   प्रश्नों के उत्तर ठीक उसके नीचे दिए गए निर्धारित स्थान पर ही लिखें निर्धारित स्थान के अलावा किसी अन्य स्थान पर लिखे गए उत्तर का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा।

Is student recommended for One-to-One mentoring?

Recommended	Strongly Recommended

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

EVALUATION INDICATORS

1. **Contextual Competence**
2. **Structure and Flow**
3. **Dimensional Coverage**
4. **Language Competence**
5. **Length of Essays**
6. **Creativity Competence**

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

For one-to-one mentoring session on this copy, call us at 7042691891 or send an email to appointment@visionias.in

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

Evaluation Parameters

- Understanding of Topic
- Introduction Competence
- Body of Essay
  - Dimensions Covered
  - Shortcomings
  - Value Additions/ Missed Dimensions
- Conclusion Competence
- Organization of Essay
- Language and Expression

Macro Comments – Essay 1

Essay Topic:

Students must not write on this page.
उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

Students must not write on this page.
उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

Macro Comments – Essay 2

Essay Topic:

Students must not write on this page.
उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

Students must not write on this page.
उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

All the Best

खण्ड–A / SECTION–A

"जब प्रेम की शक्ति, शक्ति के प्रेम पर विजय प्राप्त कर लेगी तो दुनिया को शांति का पता चल जाएगा"

"तकदीर बदल जाती है; शहंशाह बदल जाते हैं; मुल्क बदल जाते हैं; मुल्कों की तारीख बदल जाती है; इस बदलती हुई दुनिया में मोहब्बत जिस इंसाँ का दामन थाम लेती है; वह इंसाँ नहीं बदलता" (मुगल-ए-आज़म फिल्म में सलीम बादशाह अकबर से कहता है।)

'प्रेम की शक्ति' व्यक्ति को संकीर्णता से मुक्त करती है। इसलिए प्रेम करने वाले व्यक्ति जगत की प्रत्येक वस्तु सुन्दर नज़र आती है; वह आपसी द्वेष, घृणा, ईर्ष्या, साम्प्रदायिकता से मुक्त होकर मानव मात्र से रागात्मक संबंध स्थापित करना चाहता है। फिर चाहे वो सलीम और अनारकली या लैला-मजनू का सांसारिक प्रेम हो या मीरा का

आध्यात्मिक प्रेम। गौरतलब है कि प्रेम केवल स्त्री-पुरुष संबंधों तक ही सीमित नहीं है। किसी को यह प्रकृति के कण-कण में दिखता है तो किसी को नर सेवा नारायण सेवा में दिखता है। रवीन्द्रनाथ टैगोर को विश्व-प्रेम का कवि कहा जाता है तो मो॰ जायसी को प्रेम की पीर का कवि कहा जाता है जो प्रेम को एक जीवन मूल्य के रूप में स्वीकार करते हुए कहते है कि—

"मानुष प्रेम भए बैकुंठी नाहिं ते का
छार एक मुट्ठी"

अर्थात मनुष्य का जीवन प्रेम के बिना राख के समान है। प्रेम से करुणा, दया, समानुभूति और परपीड़ा का एहसास होता है। प्रेम की शक्ति का यही संदेश हमें 'बुद्ध' के "सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय" में भी दिखता है तो 'ईसा' की शांति, पैगम्बर के भाईचारे, महावीर की अहिंसा और

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

उपनिषदों के "सर्वे भवन्तु सुखिन:" में भी दिखता है।

लेकिन कभी-कभी प्रेम की यह पवित्र भावना दूषित हो जाती है। जब व्यक्ति अपने ही धर्म; सम्प्रदाय और नस्ल से प्रेम करता है और दूसरे के धर्म, रंग, जाति, देश से घृणा करने लगता है तो प्रेम जैसी पवित्र भावना नफ़रत, घृणा, साम्प्रदायिकता, तानाशाही और नस्लवाद का रूप ले लेती है।

धन की शक्ति; धर्म की शक्ति; रूप की शक्ति और सेना की शक्ति जब प्रेम से बढ़कर हो जाती है तो व्यक्ति, समाज व राष्ट्र की आत्मा जहरीली हो जाती है। इसी "~~Power~~ love of ~~love~~ power" के बारे में कहा जाता है कि - "power tends corrupt; absoulut power corrupt absolutly" इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण देखने को मिलते है।

जहाँ शक्ति के प्रेम में पड़कर लोगों ने मानवता को ~~युद्ध; हिंसा~~ युद्ध, हिंसा और अशांति की ओर धकेल दिया।

अपने धर्म की शक्ति से प्रेम करने वाले धर्मयोद्धाओं ने इतिहास में कई नरसंहार किए। धर्म युद्धों का इतिहास ऐसी रक्तरंजित लड़ाइयों का गवाह है। अपनी नस्ल को श्रेष्ठ मानने वाले तानाशाह हिटलर ने लाखों लोगों को मौत की नींद सुलाने का जघन्य अपराध शक्ति के प्रेम में पड़कर ही किया।

'श्वेत जाति का भार' जैसी औपनिवेशिक मानसिकता love of Power का ही परिणाम थी, जहाँ लाखों एशियाई अफ्रीकी आबादी को दास बनाकर पश्चिमी बाजारों में बेचा और खरीदा गया। उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद और नस्लवाद शक्ति से प्रेम का ही नतीजा था।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

प्रश्न यह उठता है कि क्या प्रेम की शक्ति ; शक्ति के प्रेम पर विजय पा सकती है ? और क्या ~~आज~~ प्रेम की शक्ति से दुनिया में वास्तविक शांति की स्थापना की जा सकती है ?

महात्मा गांधी ने कहा ~~कहते~~ है - "मैं जब भी निराश होता हूं तो इतिहास में देखता हूं। जहाँ कई ऐसे हत्यारे और तानाशाह हुए है जो एक वक्त पर अपराजेय लगते थे लेकिन अंत में जीत प्रेम की ही होती है और तानाशाहों को भूला दिया जाता है।"

"अशोक मौर्य" ने शक्ति के प्रेम का मार्ग छोड़कर युद्ध-नीति की जगह 'धम्म-नीति' को अपनाया और मानव प्रेम, शांति अहिंसा का प्रसार करने के लिए अपने साम्राज्य ; धन ; सेना का उपयोग किया और आज इतिहास में उसे सबसे अधिक आदर के साथ 'महान सम्राट अशोक' के रूप में

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

याद किया जाता है। 'अशोक' से पूर्व और उसके बाद भी कई पराक्रमी शासक और योद्धा हुए लेकिन उन्हें इतिहास में वैसा स्थान न मिला। 'अशोक' को प्रसिद्धि प्रेम की भक्ति के कारण मिली न कि शक्ति के प्रेम के कारण।

सूफियों, भक्त कवियों ने अपने साहित्य में प्रेम के महत्व का बखान करते हुए इसे सत्ता, धन, ज्ञान से भी ऊँचा बताया है। अमीर खुसरो, रहीम, तुलसी, सूर, कबीर, मीरा हो या आधुनिक काल के साहित्यकारों में वर्ड्सवर्थ, कॉलरिज, शेक्सपीयर, मिर्जा गालिब, निराला, जयशंकर प्रसाद हो सबने मानवीय प्रेम की भावना का सबसे ऊँचा रूप माना। कबीर तो लिखते हैं कि-

"पोथि पढ़ि-पढ़ि जग मुआ पंडित भया न कोय
ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय"

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

कवियों ने प्रेम की महिमा को गाया है तो कर्मयोगियों ने जीवन के अलग-अलग क्षेत्रों में यह स्थापित किया है कि प्रेम की शक्ति से ही वास्तविक क्रांति संभव है।

लोक प्रशासन में देखें तो सत्ता के मोह, पद के आलस्य ने जहाँ नौकरशाही में लाट साहब कल्चर, लालफीताशाही, भ्रष्टाचार, सिफारिश कल्चर व नियमबद्धता को बढ़ावा देकर इसे जनता से दूर करने का काम किया तो वहीं दूसरी ओर करुणा और सेवा भाव से भरे सिविल सेवकों ने प्रेम की शक्ति से नई मिसाल नए मील के पत्थर भी स्थापित किए।

डॉ. सुमित शर्मा (IAS) ने जेनरिक दवाइयों के क्षेत्र में क्रांति लाने का काम किया तो प्रकाश सिंह ने पुलिस व्यवस्था को और मानवीय बनाने के लिए प्रयास किया। एस. आर. शंकरन जैसे कुछ विरले लोक सेवक भी हुए जिन्होंने वंचित वर्गों के उत्थान के

लिए अपने वेतन का अधिकांश हिस्सा दान कर दिया।

समाज के क्षेत्र पर ऐसे कई समाज सेवी हुए जिन्होंने प्रेम की शक्ति में विश्वास कर लाखों लोगों के जीवन में क्रांति लाने का काम किया। डॉ. अंकुरानी चन्द्रशेखर ने 3.15 लाख लोगों के अंधेपन का निःशुल्क इलाज किया। कैलाश सत्यार्थी ने 85 हजार से अधिक बच्चों के बचपन को बाल मजदूरी के काम से मुक्त कराया।

वर्तमान में बढ़ती आर्थिक असमानता का समाधान प्रेम की शक्ति से ही संभव है। "सर्वाइवल ऑफ द रिचेस्ट" रिपोर्ट के अनुसार भारत 1% अमीरों के पास देश की 40% पूंजी है जबकि ठीक इस समय 19 करोड़ आबादी दो वक्त के भोजन से भी वंचित है।

गरीबी, भुखमरी, अशिक्षा जैसी समस्याओं का स्थाई समाधान प्रेम की शक्ति से ही संभव है। अज़ीम प्रेम जी ने Covid-19 के दौरान हर रोज 22 करोड़ का दान किया तो सोनू सूद जैसे समाज सेवियों ने प्रवासी मजदूरों की मदद कर यह साबित किया कि वास्तविक आनंद सुख की प्राप्ति में न हो कर देने के आभास में है।

'रामधारी सिंह दिनकर' ने सामाजिक समानता का महत्व बताते हुए कहा भी है कि-

"जब तक मनुज-मनुज का सुख भाग नहीं सम होगा
शमित शमित न होगा कोलाहल संघर्ष नहीं कम होगा"

राजनीतिक क्षेत्र में देखे तो बढ़ता अपराधीकरण, सत्ता लोलुपता के लिए खरीद-फरोक्त, बाहुबल व धन बल का प्रयोग, साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण; यह सब शक्ति के प्रेम के कारण ही है। नेता जो सत्ता में

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

है वह येन-केन-प्रकारेण सत्ता में बना रहना चाहता है फिर चाहे इसके लिए लोकतंत्र संवैधानिक मूल्यों और नैतिकता का गला ही क्यों न ~~घोंटना~~ घोंटना पड़। उत्तरी कोरिया, म्यामार मे सैन्य तानाशाही हो या अफ्रीका में गृह-युद्ध; रूस-यूक्रेन का युद्ध हो या चीन-ताइवान का तनाव इन सारे भू-राजनीतिक विवादों की जड़ में 'love of power' की भावना ही है।

वैश्विक स्तर पर वास्तविक शांति UNO को अधिक समावेशी; प्रभावी व लोकतांत्रिक बनाकर SDG- एजेंडा 2030 को लागू कर समावेशी व संधारणीय विकास सुनिश्चित कर ही स्थापित की जा सकती है। जैसा कि खलील जिब्रान ने कहा है कि 'प्रेम ही वह भावना है जो न दो देशों के बीच से गुजरती है न

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

दो ~~सु~~ समुदायों के मध्य से यह गुजरती है मानव मात्र के हृदय से" इसलिए दुनिया का कोई भी व्यक्ति हो ; किसी भी धर्म, जाति, नस्ल का क्यों न हो वह प्रेम की शक्ति को समझता है। मनुष्य ही नहीं पशु-पक्षियों को भी प्रेम की शक्ति का अहसास होता है।

इसी प्रेम की शक्ति द्वारा बढ़ते हथियारों की दौड़ को रोकना होगा ताकि लाखों लोग मौत के साये में जीने के बजाय आजादी और सुरक्षा से जी सके। प्रेम की शक्ति से ही हम विज्ञान और तकनीक को मानवीय रूप दे सकते हैं। आज हमारे पास गाइडेड मिसाइलें और मिसगाइडेड मैन हैं। इस स्थिति को बदलकर विज्ञान को अधिक मानवीय चेहरा देना है ताकि कोई आइंसटाइन परमाणु बम ~~न बना सके~~। बनाकर अविवेकी सत्ताधारियों को न सौंपे।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

हमें सत्ता के पुजारियों से अधिक प्रेम के पुजारियों की जरूरत है ताकि मानवता वास्तविक शांति का अहसास कर सके जहाँ हर व्यक्ति; हर प्राणी को दया और ~~करुणा~~ का सहारा मिले। अंत में यह कहकर अपनी बात को ~~समाप्त~~ पूर्ण करना चाहूँगा कि "युद्ध और प्रेम में सब जायज है।" यह बात सही नहीं है क्योंकि युद्ध कभी जायज नहीं होता और प्रेम हमेशा जायज होता है। ~~जयशंकर~~ प्रसाद ने वैश्विक प्रेम की कल्पना में कहा भी है कि -

"औरों को हँसते देखो मनु हँसो और सुख पाओ
अपने सुख को विस्तृत कर सबको सुखी बनाओ।"

"हमें सीमित निराशा को स्वीकार करना चाहिए लेकिन अनंत आशाओं को कभी नहीं खोना चाहिए"

"क्या हार में क्या जीत में
किंचित नहीं भयभीत मैं,
कर्तव्य पथ पर जो मिला
यह भी सही वह भी सही"

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की इन काव्य पंक्तियों में हार और जीत; निराशा और आशा को समान रूप से स्वीकारने की ही बात कही गई है। क्योंकि कोई भी असफलता अंतिम नहीं होती उसमें भावी सफलता की आशा और उम्मीद भी समायी हुई होती है। भारत के इसरो संस्थान ने वर्ष 2019 में चन्द्रयान-2 को चन्द्रमा पर सॉफ्ट

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

लैंडिंग कराना चाहा; लेकिन अंतिम 10 मिनट में असफलता के बहुत करीब पहुँचने के बाद भी 'इसरो' सॉफ्ट लैंडिंग कराने में सफल नहीं हो पाया। इसरो ने अपनी सीमित निराशा को स्वीकार किया और बहाने बनाने व दोषारोपण करने की बजाय अगला चन्द्र मिशन चन्द्रयान -3 बनाया और अंतत: 23 अगस्त, 2023 को भारत चन्द्रमा के दक्षिणी छोर पर सॉफ्ट लैंडिंग कराने वाला दुनिया का पहला देश बना।

यह उदाहरण यही बताता है कि हमें सीमित निराशा को स्वीकार कर अपनी गलतियों को सुधारना चाहिए लेकिन अनंत आशा का दामन भी नहीं छोड़ना चाहिए। भारत में कहावत भी है कि "आशा अमर बेल है।" अर्थात आशा असीमित

है।

प्रश्न यह उठता है कि हमें सीमित निराशा को स्वीकार क्यों करना चाहिए? 'एडीसन' ने एक हजार बार बार बल्ब बनाने का प्रयास किया लेकिन हर बार उसे असफलता ही हाथ लगी। उसने अपनी सीमित निराशा को स्वीकार कर पुनः प्रयास किया और इस बार वह सफल हुआ। एडीसन ने कहा "मैं कभी भी असफल नहीं हुआ; मैंने 1000 ऐसे तरीकों की खोज की जिनसे बल्ब नहीं बनाया जा सकता है।" यानि की असफलता एक सीढ़ी है जिससे व्यक्ति सफलता तक पहुँचने के लिए प्रयोग में लेता है।

निराशा सीमित इस रूप में है कि समय हमेशा बदलता है। निराशा, नाउम्मीदी का समय भी सीमित होता है। आशा और उम्मीद द्वारा निराशा को भूलाकर व्यक्ति; समाज और देश नए स्वप्न के साथ उठ खड़ा होता है अंततः सफलता

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

मिलती है। दूसरों की कहानी तो इसका सबूत है ही साथ ही जीवन के अलग-अलग क्षेत्रों में भी हम इस बात को सही साबित होता हुआ पाते है।

वर्ष 2021 की UPSC CSE परीक्षा के पहले ही चरण (Pre. Exam) में मैं फेल हो गया था। वह दौर मेरे लिए बेहद निराशाजनक था। लेकिन जैसे उम्मीद पर दुनिया कायम है वैसे ही विश्वास के साथ मैंने अनंत आशा का सहारा लेकर वर्ष-2022 का पुन! Exam दिया इस बार मैं न केवल प्रारम्भिक परीक्षा पास कर पाया बल्कि अंतिम रूप से सफल भी हुआ। यह मेरा व्यक्तिगत उदाहरण भी इस बात को साबित करता है कि व्यक्ति के जीवन में UP एवं down स्टेजेज् आते है लेकिन उसे उम्मीद का दामन नहीं छोड़ना चाहिए।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

व्यापक रूप से देखे तो मानव सभ्यता का सम्पूर्ण विकास और इतिहास नाउम्मीदी पर उम्मीद की जीत का ही परिणाम है। डॉ. युवाल नोआ हरारी अपनी किताब 'सेपियंस' में लिखते है कि होमो सेपियंस की सफलता के पीछे सबसे बड़ा कारण उसकी आशा और कल्पना की शक्ति है।

होमो सेपियंस ने मिथकों के माध्यम से धर्म, दर्शन, नैतिकता और समाज व्यवस्था की संरचना की। अफ्रीका से निकलकर साइबेरिया के ठंडे मरुस्थलों तक की यात्रा की इस सम्पूर्ण विकास में उम्मीद की किरण ने ही मनुष्य को आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

विज्ञान की सारी प्रगति ~~जिज्ञासा~~ अनंत आशा का परिणाम है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

अंतरिक्ष में एक्सोप्लेनेट की खोज करना हो या क्वांटम फिज़िक्स द्वारा भौतिकी को नया आकार देना हो। टाइम ट्रेवल का स्वप्न हो या मानव क्लोनिंग व AI द्वारा मृत्यु का समाधान खोजना हो। यह सब मनुष्य की अनंत आशा का ही परिणाम है। विज्ञान में निराशा या हार जैसा कुछ भी नहीं होता क्योंकि जितना सफलता नहीं सीखाती है उससे कहीं ज्यादा असफलता सीखाती है।

जीवन की तरह खेल जगत में भी निराशा और आशा का द्वन्द्व चलता है और अन्ततः वही जीतता है जो अंत तक हिम्मत नहीं हारता है। वर्ष 2011 के क्रिकेट वर्ल्डकप में शुरुआत से ही भारत की स्थिति डांवाडोल की थी लेकिन फाइनल में लगातार सचिन और सहवाग के विकेट गिरने

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

पर निराशा गहराने लगी। उस समय भारत के कप्तान महेन्द्र सिंह धोनी ने आखिरी ओवर में छक्का लगाकर भारत को जीत दिलाई। कैप्टन कूल के नाम से जाने जाने प्रसिद्ध एम.एस. धोनी का सम्पूर्ण जीवन निराशाओं में आशा की जीत के समान है। इनके अलावा मेरीकॉम, नखित जरीन, देवेन्द्र झाझड़िया, मीराबाई चानू जैसे सैकड़ों नाम के पीछे एक यही कहानी है कि उन्होंने निराशा के समय भी आशा का दामन नहीं छोड़ा।

भारत वर्ष 1991 में लगभग आर्थिक रूप से दिवालिया होने की स्थिति में आ चुका था। हमारे फॉरेक्स रिजर्व नाममात्र के बचे थे। ऐसी निराशा की स्थिति में भारतीय सरकार ने अनंत आशा के सहारे LPG रिफॉर्म को लागू किया और आज भारत दुनिया की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

है। भारत ने हरित क्रांति, श्वेत क्रांति के माध्यम से देश को खाद्यान्न क्षेत्र में आत्मनिर्भर निर्यातक बनाने का काम किया तो वहीं सूचना प्रौद्योगिकी और सर्विस सेक्टर में भारत एक ग्लोबल पावर है।

आजादी के समय भारत के समक्ष निराशा और चुनौतियों की कमी ~~न थी लेकिन~~ न थी। शरणार्थी समस्या, एकीकरण की चुनौती, संविधान निर्माण की चुनौती; अशिक्षा, गरीबी और भुखमरी के साथ एक नवजात स्वतंत्रता को संभालना कठिन काम था। लेकिन भारत ने उम्मीदों और आशाओं से भरा लम्बा सफर तय किया और आजादी के 75 वर्ष बाद अब अमृतकाल की तरफ कदम बढा रहा है।

भारत का अमृत महोत्सव और 2047 तक अमृतकाल भी अनंत आशाओं से ही निर्मित है। 2047 ई. तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की आशा शासन व प्रशासन के सामने एक नया स्वप्न रखती है।

वैश्विक स्तर पर देखे तो दो विश्व युद्धों के बाद सम्पूर्ण यूरोप और विश्व विखंडित और अव्यवस्थित था। कोल्ड वॉर ने इसे और निराशामय बनाया लेकिन नव उदारवाद के बाद उदारीकरण, वैश्वीकरण ने आज दुनिया को ग्लोबल विलेज में बदल दिया।

एजेंडा 2030 के रूप में SDG लक्ष्य नए विश्व की अनंत आशाएँ है जहाँ कोई भूखा व अशिक्षित या बेघर नहीं होगा। यह स्वप्न वर्तमान

के निराशामय वातावरण में भी शायद दुनिया को नई उम्मीद देता है।

जैसे रात चाहे कितनी ही गहरी और स्याह क्यों न हो सुबह हो कर रहती है। वैसे ही निराशा के क्षण कितने ही विषादपूर्ण क्यों न हो आशा और उम्मीद की किरण उसे भेद ही देती है।

दुनिया में अपराध, गरीबी, भुखमरी और अन्याय है लेकिन मानवता के सेवियों की भी कमी नहीं है। बिल एंड मलिंडा गेट्स फाउंडेशन, अजीम प्रेमजी फाउंडेशन, अर्थफंड, ग्रीनपीस, एमनेस्टी इंटरनेशनल जैसे संस्थान है जो बेहतर विश्व बनाने की कल्पना और आशा लेकर चल रहे है।

UNO, WHO, WTO जैसी वैश्विक संस्थाएं प्रयासों, निगरानी व सहयोग

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

को बढ़ावा देकर ग्लोबल गवर्नेंस को साकार करने का काम कर रही है।

मनुष्य ने 'मत्स्य न्याय' से 'मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा' तक का सफ़र तय किया है। ~~लेकिन~~ इस सफ़र में धर्म युद्ध, ~~वि~~ महायुद्ध, उपनिवेशवाद साम्राज्यवाद और नस्लवाद जैसी निराशायें आई लेकिन मानवता ने आशा के साथ आगे बढ़ती रही।

जैसा की महात्मा गांधी कहते है कि - "मानवता समुन्दर की भांति है इसकी कुछ बुन्दें मैली हो सकती है लेकिन हमें मानवता से विश्वास नहीं खोना चाहिए।"

उसी प्रकार जीवन में भी हम, को असफलताओं से घबराकर आत्महत्या, अवसाद जैसे गलत कदम नहीं उठाकर

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

उमंग और जश अपनों के साथ आगे बढ़ना चाहिए जैसा कि हिन्दी के कवि दुष्यंत कुमार भी कहते है-

"कौन कहता है कि आसमान में सुराख हो नहीं सकता
एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारों"

Call us : 8468022022
Visit us : www.visionias.in

SPACE FOR ROUGH WORK

(भूमिका) प्रेम की शक्ति क्या होती है। उदाहरण
↳ मानवीय प्रेम, - गृहस्थी का प्रेम
- वैश्विक प्रेम
- प्रकृति से प्रेम, व्यापक
- (औरों को हँसते देखो; हँसो और ~
- सर्वे भवन्तु सुखिनः
- अधिकार नहीं रहता
- अहम नहीं रहता - सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय
- समर्पण का भाव
- दया / करुणा

- रहिमन धागा
→ प्रेम न बाड़ी
→ मानुष प्रेम भए बैकुंठ
→ मोहब्बत से
- मुस्कुराहट

- करुणा बुद्धिमत्ता का सर्वोच्च रूप है।
- मेरी नज़र में एक मेमने का जीवन भी उतना ही

(विज्ञान) परमाणु / आईन्स्टाइन - मदर टेरेसा, विवेकानन्द, (नर सेवा नारायण)

(इतिहास) - अशोक, अम्बेडकर, औरंगजेब - अकबर, हिटलर
- इतिहास में लाचार और तानाशाह ... मुसोलिनी

शक्ति का प्रेम → Power ~~don't~~ corrupt fears

power tends to corrupt absolute power corrupt absolutely

Corrupt, perhaps the fears of loss of power
→ तानाशाह, अधिनायकवाद, नौकरशाही में घमंड

(1) नौकरशाही - शक्ति को प्रेम = वैनेरीयन / ... साहब / स्वार्थ
- प्रेम की शक्ति - / मंजू राजपाल + S. R. शंकरन, सुमित शर्मा

(3) (समाज) - पुरुष / जातिवाद / साम्प्रदायवाद / बहुसंख्यकवाद / नस्लवाद
↳ मदर + डॉ. कुरियन + ... + डॉ. राजेन्द्र ... + डॉ. शांति शर्मा

SPACE FOR ROUGH WORK

① हमें सीमित निराशा को स्वीकार करना चाहिए।

↳ अनंत आशाओं को कभी नहीं खोना चाहिए।

Eg- क्या हार में क्या जीत में
किंचित नहीं भयभीत मैं,
कर्तव्य पथ पर जो मिला
यह भी सही वह भी सही

Eg- रहनुमाई की आंखों पर फिदा है यह दुनिया
इस बहकती हुई दुनिया को संभालो यारों
कौन कहता है कि आसमान में सुराख नहीं हो स.
एक पत्थर

Eg- जब तुम मस्तक पर ~~पहली बार~~
बर्फ का तूफ़ान झेलोगे और काँपोगे नहीं
तब तुम पाओगे कोई फर्क नहीं ~~पड़ता~~
अंत सब कुछ जीत लेने में और अंत तक
हिम्मत न हारने में

इस पद्य का उद्देश्य

- ~~उद्देश्य~~ नहीं - भांत भवन में टिक रहना
किन्तु पहुंचना उस सीमा तक, जिसके आगे राह नहीं।